मई 2024

₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

PDA का नायक

R.N.I. No. 68832/97

www.samajwadiparty.in

समाजवादी नीतियों से ही सामाजिक न्याय के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। समाजवादी पार्टी का संगठन मजबूत है और वही उत्तर प्रदेश में भाजपा को हरा सकता है। पार्टी के कार्यकर्ता गांव-गांव जाकर भाजपा सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ जनता को जागरूक करें।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन

मई 2024
वर्ष 25 | संख्या 07

प्रिय पाठकों,

आपको बधाई एवं हृदय तल से आभार। आपकी प्रिय पत्रिका समाजवादी बुलेटिन अपने रजत जयंती वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। आप सभी के प्यार और उत्साहवर्धन की बदौलत यह संभव हो पाया। समाजवादी बुलेटिन के ढाई दशक के सफर में इसके नए कलेवर को आपने खूब सराहा। हम भरोसा दिलाते हैं कि वैचारिक स्तर पर आपको समृद्ध करने का हमारा प्रयास सतत जारी रहेगा। कृपया अपना स्नेह यूं ही बनाए रखें।

धन्यवाद

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक

प्रोफेसर रामगोपाल यादव

☎ 0522 - 2235454

samajwadibulletin19@gmail.com

bulletinsamajwadi@gmail.com

Mob:- 9598909095

/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए

19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित

अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

अंदर

फोटो फीचर : समाजवादी प्रचार के रंग 04

06 कवर स्टोरी **PDA का नायक**

अखिलेश और कन्नौज 14

करीब ढाई दशक पहले जिस कन्नौज लोकसभा सीट से श्री अखिलेश यादव ने अपना सियासी सफर शुरू किया था उसी इत्र नगरी कन्नौज ने फिर एक बार अखिलेश जी के माथे पर खुशबू भरा विजय तिलक लगाने के लिए अपनी बाहें फैला दी हैं।

बेरोजगारी पर कन्नी काट रही भाजपा 36

भाजपा के ढहते किले में मचा हाहाकार 32

समाजवादी प्रचार के रंग

लोकसभा चुनाव-2024 जैसे-जैसे आगे की ओर बढ़ रहा है समाजवादी पार्टी के प्रचार का रंग और चटख होता जा रहा है। जोश से लबरेज कार्यकर्ता और पार्टी प्रत्याशी जनता के बीच पहुंच रहे हैं। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के पीडीए की मुहिम के जमीन पर उतर जाने से सभी सीटों पर समाजवादी पार्टी के पक्ष में भरपूर समर्थन मिलने से प्रत्याशियों के हौसले और बुलंद हैं। प्रत्याशियों ने नुक्कड़ सभाएं, जनसंपर्क तेज कर दिया है।अपने-अपने क्षेत्र में चुनाव प्रचार कर रहे अनुभवी सपा नेताओं की भीड़ में युवा अदिति यादव ने अपनी अलग प्रभावी छाप छोड़ी है। सपा मुखिया श्री अखिलेश यादव की बिटिया अदिति ने अपनी मां डिंपल यादव के लिए मैनपुरी में जमकर चुनाव प्रचार किया। पेश है समाजवादी प्रचार का रंग दिखाती ये तस्वीरें :

डिंपल यादव, मैनपुरी

राम प्रसाद चौधरी, बस्ती

धर्मेन्द्र यादव, आजमगढ़

रविदास मेहरोत्रा, लखनऊ

भीष्म शंकर तिवारी, डुमरियागंज

आनंद भदौरिया, धौरहरा

अवधेश प्रसाद , फैजाबाद

अदिति यादव

बाबू सिंह कुशवाहा, जौनपुर

सनातन पाण्डेय , बलिया

अजय प्रताप सिंह , कुशीनगर

अफ़ज़ाल अंसारी, गाजीपुर

लालजी वर्मा , अंबेडकर नगर

राजीव राय, घोसी

PDA का नायक

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने जब PDA यानी पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक समुदायों की एका का नारा दिया था तब राजनीतिक गलियारों में इसके प्रति जिज्ञासा के भाव उपजे थे। अब जबकि लोकसभा चुनाव 2024 के मतदान की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है तो न सिर्फ उत्तर प्रदेश बल्कि पूरे हिंदी पट्टी में PDA का नारा सत्तारूढ़ NDA के खिलाफ सबसे मजबूत मुद्दा बनकर उभरा है।

PDA को मिल रही इस अहमियत ने एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ के रूप में श्री अखिलेश यादव की पहचान को और प्रखर किया है। PDA को मुख्य मुद्दा बनाकर भाजपा

की रणनीति को ध्वस्त करने की श्री अखिलेश यादव की इस पहल ने उन्हें वस्तुत: PDA के नायक के रूप में उभारा है।

दरअसल जब श्री यादव ने बीते साल PDA का नारा सबसे पहले दिया तो किसी को अनुमान नहीं था कि यह एक बड़े सामाजिक समुदाय को एक करते हुए भाजपा की विभेदकारी राजनीति के खिलाफ मजबूती से खड़ा कर देगी लेकिन श्री अखिलेश यादव को इसका पूरा पूर्वानुमान था कि पिछड़ों, दलितों व अल्पसंख्यकों, आधी आबादी और यहां तक कि अगड़ों के एक बड़े वर्ग में भाजपा की नीतियों के खिलाफ खासा आक्रोश है।

लिहाजा उन्होंने इन तबकों को एक करते हुए न सिर्फ उनकी आवाज को अपना समर्थन दिया बल्कि सामाजिक न्याय की समाजवादी नीति को अंजाम तक पहुंचाने का उदाहरण भी पेश किया।

कई राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2022 के समय जब श्री अखिलेश यादव ने जातीय जनगणना की मांग जोर-शोर से उठानी शुरू की थी उसी समय से PDA का मुद्दा उनकी भविष्य की प्राथमिकताओं में शामिल हो चुका था। वस्तुत: जातीय जनगणना की जिस मांग को श्री अखिलेश यादव ने उठाया उसका प्रभाव न सिर्फ सामाजिक न्याय की राजनीति करने वाले दलों पर पड़ा बल्कि देश की प्रमुख विपक्षी पार्टी कांग्रेस ने भी इसे प्रमुखता से उठाना शुरू किया।

जातीय जनगणना कराने की श्री अखिलेश यादव की मांग का ही असर रहा कि समाज के वंचित तबकों के बीच भाजपा की दोमुंही राजनीति का असली चेहरा भी सामने आने लगा।

समाज के एक बड़े तबके को यह एहसास होने लगा कि महज 5 किलो अनाज देकर पिछड़ों, दलितों के प्रति अपनी जिम्मेदारी की इतिश्री करने वाली भाजपा कैसे महंगाई और बेरोजगारी जैसे मुद्दों से कन्नी काट रही है। जैसे-जैसे जातीय जनगणना की मांग जोर पकड़ती गई, समाज के वंचित तबकों के बीच अपनी जरूरतों के हक में एकजुट होने

और उसे हासिल करने के लिए राजनीतिक रूप से समाजवादी पार्टी का साथ देने की प्रवृत्ति बढ़ती गई जिसका नतीजा रहा कि विधानसभा के चुनाव में सपा ने न सिर्फ अपनी सीटों में दोगुने से ज्यादा का इजाफा किया बल्कि उसके वोट प्रतिशत में खासी वृद्धि हुई।

वर्तमान में श्री अखिलेश यादव द्वारा उठाए गए PDA के मुद्दे का व्यापक प्रभाव लोकसभा चुनाव में भी दिखने लगा है। राजनीति के जानकार समाजवादी पार्टी के घोषित प्रत्याशियों के नामों में भी PDA को प्रमुखता मिलने की बात मानने लगे हैं। इस रणनीति का ही असर है कि उन सभी 62 लोकसभा सीटों जहां पर समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी हैं वहां पार्टी बहुत मजबूती से मुकाबले में है। गठबंधन के दूसरे साथियों को भी PDA का लाभ मिल रहा है।

PDA को इस मुकाम तक लाने में श्री अखिलेश यादव ने काफी संघर्ष किया। दिनरात की मशक्कत के बाद वह PDA यानी पिछड़ों, दलितों व अल्पसंख्यकों के अलावा अगड़ों के उस तबके को भी समझाने में कामयाब हो गए कि समाज के सभी तबके को उसका हक मिलना चाहिए। यही वजह रही कि आधी आबादी और अगड़े भी बड़ी संख्या में श्री अखिलेश यादव की इस मुहिम में उनके समर्थन में आगे आए। ज्यादा दिन नहीं बीते जब PDA पखवाड़ा में यूपी के तमाम जिलों में अगड़ों ने न सिर्फ नुक्कड़ सभाएं कराईं बल्कि उनके अधिकारों के लिए संघर्ष करने का भरोसा भी दिया।

श्री अखिलेश यादव ने PDA का न सिर्फ नारा दिया बल्कि आबादी के हिसाब से उन्हें अधिकार देने के लिए लोकसभा चुनाव में भारी संख्या में टिकट देकर यह संदेश दिया कि केंद्र में इंडिया गठबंधन की सरकार बनने पर PDA का बोलबाला होगा। PDA समुदाय में यह स्थापित हो चुका है कि श्री अखिलेश यादव ही उनके नायक हैं और उनके सत्ता में भागीदार होने से ही उन्हें आबादी के हिसाब से हक मिलेगा। लोकसभा चुनाव में जिस तरह PDA ने इंडिया गठबंधन को जिताने की ठानी है, वह उनके बेहतर भविष्य का स्पष्ट संकेत भी है।

भारत
का
संविधान

कन्नौज के रण में अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के कन्नौज लोकसभा सीट से नामांकन दाखिल करने के दौरान उमड़ा जनसैलाब, उत्साह से लबरेज कार्यकर्ताओं के गगनभेदी नारे व आम जनता का हुजूम गवाही दे रहा था कि कन्नौज की जनता ने उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की जीत का विजय घोष कर दिया है।

नामांकन में श्री अखिलेश यादव के समर्थन में उतरी जनता ने जीत के आगाज का भरोसा दिलाकर समाजवादी पार्टी कार्यकर्ताओं के हौसले को आसमान पर पहुंचा दिया। वहीं, श्री अखिलेश यादव के कन्नौज के चुनावी रण में उतरने के फैसले ने भाजपा को ध्वस्त कर दिया है। कन्नौज के रण में आने से श्री यादव ने पूरे यूपी खासतौर पर आसपास के जिलों में सपा कार्यकर्ताओं में ऊर्जा का नया संचार कर दिया है।

श्री अखिलेश यादव ने 25 अप्रैल को कन्नौज संसदीय सीट से नामांकन किया। कन्नौज की जनता के आग्रह पर वह कन्नौज से चुनाव मैदान में उतरे। नामांकन के दिन

कलीम कुरैशी

समाजवादी पार्टी के कार्यालय को गुब्बारों और फूलों से अपने नायक के लिए सजाया गया था। वहां उनका स्वागत ऐसे ही किया गया जैसे वह चुनाव जीतकर पहुंचे हों। यहां उमड़ा जनसैलाब बता रहा था कि नामांकन के साथ ही श्री अखिलेश यादव की जीत भी पक्की हो गई है। साथ ही यहां की जीत से पूरे उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की पताका फहरने जा रही है।

कार्यकर्ताओं व आमजन का उत्साह, प्यार, स्नेह देखकर श्री अखिलेश यादव भी भावुक हो गए। कन्नौज से ही वह पहली बार सांसद चुने गए थे इसलिए यहां से उनका खास लगाव है। समाजवादी पार्टी कार्यालय से श्री अखिलेश यादव अपने प्रस्तावकों कन्नौज समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष कलीम खान, कल्याण सिंह दोहरे, आकाश मौर्य तथा यश दोहरे के अलावा समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव प्रोफेसर रामगोपाल यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल के साथ नामांकन करने कलक्ट्रेट पहुंचे और नामांकन पत्र दाखिल किया।

नामांकन के दिन कन्नौज में जश्न जैसा माहौल था। पूरे संसदीय क्षेत्र में आम जनता श्री अखिलेश यादव के पक्ष में सड़कों पर दिख रही थी और युवाओं की टोलियां गगनभेदी नारे लगाने में जुटी थी। महिलाओं व बुजुर्गों के चेहरों पर छाई खुशी भी नामांकन के साथ जीत की जमानत दे रही थी।

अखिलेश और कन्नौज

...एक रिश्ता खुशबू से भरा

बुलेटिन ब्यूरो

करीब ढाई दशक पहले जिस कन्नौज लोकसभा सीट से श्री अखिलेश यादव ने अपना सियासी सफर शुरू किया था उसी इत्र नगरी कन्नौज ने फिर एक बार अखिलेश जी के माथे पर खुशबू भरा विजय तिलक लगाने केलिए अपनी बाहें फैला दी हैं। फर्क इतना ही कि साल 2000 में अपने पिता नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव की खाली की गई कन्नौज सीट पर जीत हासिल करने वाले अखिलेश तब एक संकोची स्वभाव वाले झिझकते, हिचकते युवा थे।

जबकि 2024 में कन्नौज के चुनावी मैदान में फिर एक बार उतरे समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश एक तपे तपाए

राजनेता हैं।उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में पांच साल तक विकास परक शासन की मिसाल दे चुके वर्तमान मेंनेता विपक्ष अखिलेश आज करोड़ों लोगों की उम्मीद हैं। नामांकन पत्र दाखिल करने के बाद उत्साह से लबरेज अखिलेश ने कहा कि कन्नौज की जो क्रान्ति है वो खुशबू की क्रान्ति है। भाजपा जिस पराजय की ओर जा रही है उसे कन्नौज क्रान्ति कहा जाएगा।

उनके आत्मविश्वास के कारण स्वाभाविक रूप से कन्नौज के चुनावी मैदान में अखिलेश जी के उतरते ही राजनीतिक हलचल तेज हो गई है। न सिर्फ कन्नौज में सपा के कार्यकर्ताओं के बीच बल्कि पूरे प्रदेश में समाजवादियों और राष्ट्रीय स्तर पर इंडिया गठबंधन के दलों में भी जबरदस्त उत्साह का संचार हुआ है।

कन्नौज से अपने पुराने रिश्तों की यादों के पन्ने पलटते हुए उन्होंने कहा कि आज का दिन उनके लिए और समाजवादियों के लिए यादगार दिन है। जब पहली बार वह कन्नौज नामांकन करने आए थे तब उन्हें नेताजी ने भेजा था। तब पार्टी के तमाम नेता आए थे, उनमें से जनेश्वर मिश्र जी आज भले ही हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उन्होंने जो आह्वान किया था और रास्ता दिखाया था उसी रास्ते पर हम लोग चल रहे हैं। नामांकन में श्री अमर सिंह, आजम खान साहब समेत तमाम ऐसे नेता आए थे, उन सभी का हमें आशीर्वाद मिला था। कन्नौज की जनता ने उन्हें सांसद बनाया था।

कन्नौज से ढाई दशक पुराने रिश्तों की डोरको और मजबूत करने के इरादों के साथ चुनावी मैदान में उतरे अखिलेश खुशबू और मोहब्बत की राजनीति करने भी उतरे हैं । भाईचारा बढ़ा कर, खुशियों की महक से वह कन्नौज को महकाना चाहते हैं और भाजपा की नफरत भरी नकारात्मक राजनीति को हटाना चाहते हैं। सपा प्रमुख अखिलेश यादव की यह चाहत अनायास ही नहीं है बल्कि कन्नौज से उनके पुराने रिश्तों से ही यह चाहत उपजी है।

कन्नौज से नामांकन करते ही उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि फिर इतिहास दोहराया जाएगा, अब नया भविष्य बनाया जाएगा। आखिर कन्नौज ही तो था जहां से वह पहली बार 2000 में सांसद चुने गए और लोकसभा पहुंचे। कन्नौज ने ही उन्हें यह विश्वास दिया कि उनमें कुछ कर गुजरने की कूवत है। वह 2009 तक कन्नौज से ही लोकसभा जाते रहे। यहीं सांसद रहते हुए उन्होंने प्रदेश की राजनीति में अपनी धमक दिखाई और मुख्यमंत्री भी बने। कन्नौज से उनका नाता कभी नहीं टूटा क्योंकि यही वह सीट थी जहां से उन्होंने राजनीति का ककहरा सीखा, यहां की खुशबू से उन्हें सकारात्मक राजनीति

कन्नौज का इत्र अखिलेश हैं मित्र

बुलेटिन ब्यूरो

पूरी दुनिया में इत्र की खुशबू के लिए मशहूर कन्नौज के इत्र को बढ़ावा देने, नियोजित तरीके से कारोबार को और ऊंचाई पर ले जाने में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने हमेशा ही प्रयत्न किया है। कन्नौज के इत्र को अपना मित्र मान चुके श्री अखिलेश यादव ने यहां के इत्र की खुशबू पूरी दुनिया में बिखेरने के लिए कई तरह के जतन किए हैं। समाजवादी सरकार में मुख्यमंत्री रहते हुए भी श्री अखिलेश यादव ने कभी भी कन्नौज के इत्र को नहीं भुलाया और हमेशा यह कोशिश करते रहे कि इत्र की खुशबू को कैसे और महकाया जाए।

कन्नौज के 'इत्र के मित्र' के रूप में श्री अखिलेश यादव ने मुख्यमंत्रित्व काल में फ्रांस के विश्व प्रसिद्ध परफ़्यूम की राजधानी माने जानेवाले शहर Grasse के साथ मिलकर Kannauj-Grasse समझौता किया था, जिससे कि वैश्विक विशेषज्ञों के साथ मिलकर कन्नौज के इत्र को विश्वस्तर तक पहुंचाया जा सके। वह इसमें कामयाब भी हुए।

श्री अखिलेश यादव ने यहीं पर अपने योगदान को नहीं रोका बल्कि कन्नौज में एक इंटरनेशनल परफ़्यूम म्यूज़ियम दिया और कन्नौज इंजीनियरिंग कॉलेज में परफ़्यूमरी के एक कोर्स की भी योजना को शामिल कराया। उस जमाने में यहां तक कहा जाने लगा था कि श्री अखिलेश यादव लखनऊ में बैठकर भी कन्नौज के इत्र की खुशबू नहीं भूले हैं और उसे पूरी दुनिया में बढ़ावा देने में जुटे हैं। कन्नौज के कारोबारी भी यह कहते रहे हैं कि कन्नौज के इत्र की खुशबू को पूरी दुनिया में महकाने में श्री अखिलेश यादव का बड़ा योगदान है।

कन्नौज के इत्र के मित्र श्री अखिलेश यादव इसे और ऊंचाइयों पर ले जाते क्योंकि उनका विजन बिल्कुल साफ था और वह आत्मीयता से कन्नौज से जुड़े थे लेकिन भाजपा सरकार ने प्रतिशोध की भावना से कन्नौज में समाजवादी सरकार में हुए विकास कार्यों को रोक दिया जिसका नुक़सान कन्नौज के इत्र उद्योग और यहां के लोगों को हुआ।

अब एक बार फिर जब श्री अखिलेश यादव ने कन्नौज की सेवा करने के इरादे से चुनावी रण में कदम रखा है तो कन्नौज के लोगों में भरोसा जगा है कि अब उनके दिन बहुरेंगे और कन्नौज के इत्र के मित्र श्री अखिलेश यादव इसकी खुशबू पूरी दुनिया में बिखेरने का काम करेंगे। कन्नौज के लोग जानते हैं कि किसी भी स्थानीय उद्योग का नये समय की मांग के अनुरूप रूपांतरण और आधुनिकीकरण ही उसे बचा और बढ़ा सकता है। जाहिर है कि उन्हें भरोसा है कि श्री अखिलेश यादव जैसी प्रगतिशील सोच और काम करने की इच्छा शक्ति ही विकास के नये प्रतिमान बनाएगी।

करने की हिम्मत मिली, यहां की गलियों ने उन्हें वह मोहब्बत दी जिसे वह अब पूरे प्रदेश में बांट रहे हैं।

भले ही अखिलेश कन्नौज के सांसद की भूमिका में नहीं रहे लेकिन कन्नौज की खुशबू वह कभी नहीं भूले और न ही कन्नौज उन्हें भुला पाया। आखिर यहां का परफ्यूम पार्क उन्हीं की देन है। इस परफ्यूम पार्क ने कन्नौज को इत्र का मित्र बनाया। लिहाजा अखिलेश साफ कहते हैं कि अगर उन्हें चुना गया तो वह कन्नौज को आगे ले जाने में नहीं चूकेंगे। अपने इंटरनेशनल परफ्यूम म्यूजियम के सपने को वह जरूर पूरा करेंगे और इत्र उद्योग को एक अलग वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से समृद्ध करने के लिए कन्नौज इंजीनियरिंग कॉलेज में परफ्यूमरी के कोर्स को लागू करने कोशिश करेंगे।

उनका सपना है कि कन्नौज की जो खुशबू, पहचान और भाईचारे की संस्कृति है। उसे और आगे बढ़ाएं और कन्नौज में विकास का ऐसा काम करेंगे कि वह इतिहास में दर्ज हो। लोगों को यहां की खुशबू दूर तलक सांसों में महसूस हो और मोहब्बत का पैगाम पूरे देश में फैले।

अखिलेश के पक्ष में जनता का विजय घोष

बुलेटिन ब्यूरो

कन्नौज संसदीय सीट से नामांकन करने के बाद 27 अप्रैल को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव कन्नौज लोकसभा क्षेत्र के रसूलाबाद विधानसभा क्षेत्र जनपद कानपुर देहात, बेला व जनपद औरैया तथा उमर्दा में रोड शो करते हुए जनसंपर्क के लिए निकले तो जनसैलाब सड़कों पर आ गया।

सामाजिक न्याय रथ पर सवार श्री अखिलेश यादव की एक झलक पाने के लिए इतनी भीड़ जुट गई कि रोड शो विजय जुलूस जैसा

दिखने लगा। ऐसा लग रहा था कि कन्नौज में चुनाव हो चुका है और श्री अखिलेश यादव जीतने के बाद कन्नौज का धन्यवाद करने निकले हैं। आम जनता जिस तरह करतल ध्वनि से श्री अखिलेश यादव का अभिवादन कर रही थी, वह किसी नायक के अभिवादन जैसा ही था। जनसैलाब बता रहा था कि कन्नौज से श्री यादव की ऐतिहासिक जीत होने जा रही है।

जनसमूह को संबोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री जी की अब तक की सभी गारंटी जुमला निकली हैं। भाजपा ने नौजवानों का भविष्य खतरे में डाल दिया है। भाजपा सरकार ने फौज की पक्की नौकरी को 4 साल की कर दी, आगे पुलिस की नौकरी भी 3 साल की हो जाए तो आश्चर्य नहीं। उन्होंने कहा कि जो संविधान बदलने निकले हैं, उन्हें बदलने का मौका है। श्री यादव ने कहा कि भाजपा बहुत पीछे चली गई है। भाजपा का सत्ता से जाना तय है। जनता संविधान बचाने के लिए वोट दे रही है। यह लोकतंत्र बचाने का भी चुनाव है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा के नेता तानाशाह हो गए हैं। लोगों को झूठे मुकदमों में फंसाने का षडयंत्र करते हैं। भाजपा के लोगों ने भ्रष्टाचार के रिकार्ड तोड़ दिए हैं। इनके भ्रष्टाचार के कारण महंगाई बढ़ गई है। भाजपा ने चंदे के नाम पर जो हजार-हजार करोड़, सौ-सौ करोड़ रुपये की वसूली की, उसकी वजह से महंगाई बढ़ी है। जिन लोगों ने भाजपा को चंदा दिया, उन्होंने अपने उत्पादों की कीमतें बढ़ा कर महंगाई बढ़ाई और मुनाफा कमाया। महंगाई से

S.R.SWEETS & NAMKEEN

जनता पिस गयी। हर वर्ग परेशान हुआ।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में जहां भी लोगों के साथ अन्याय हुआ, समाजवादी पार्टी के लोग खड़े हुए। मदद के लिए पहुंचे। समाजवादियों ने हमेशा किसानों, नौजवानों, गरीबों, पिछड़ों, दलितों, अल्पसंख्यकों की लड़ाई लड़ी। रसूलाबाद, कन्नौज समेत इस क्षेत्र में जो विकास दिखाई दे रहा है वह समाजवादियों की देन है। भाजपा ने कन्नौज का विकास रोका है। विकास योजनाओं को पूरा नहीं होने दिया।

कन्नौज क्रांति से हारेगी भाजपा

बुलेटिन ब्यूरो

कन्नौज लोकसभा सीट पर समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी के रूप में नामांकन के बाद मीडिया से बातचीत करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि कन्नौज के लोगों के वे आभारी है कि उन्होंने दुबारा यहां से चुनाव लड़ने को कहा है। उन्हें उम्मीद है कि पहले की तरह जनता का उन्हें भरपूर आशीर्वाद मिलेगा। उन्होने कहा कि कन्नौज की खुशबू, सुगन्ध और मोहब्बत की पहचान रही है। इसे हम आगे बढ़ाने का काम करेगे ताकि विकास के साथ सुगंध का विस्तार हो। वह इतिहास में भी दर्ज हो।

नामांकन के बाद पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कन्नौज से अपने रिश्तों को याद करते हुए श्री अखिलेश भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि पहले भी वह कन्नौज के लोगों की सेवा करने आए थे फिर उन्हें इसका सौभाग्य मिल रहा है। सत्ता में वह रहे या नहीं रहे लेकिन कन्नौज से उनका जुड़ाव हमेशा बना रहा। वह लगातार कन्नौज के लोगों से जुड़े रहे।

उन्होंने कहा कि कन्नौज की जो क्रांति है वो खुशबू की क्रांति है। भाजपा जिस पराजय की ओर जा रही है उसे कन्नौज क्रांति कहा जाएगा। सपा और INDIA गठबंधन के स्थानीय नेताओं, कार्यकर्ताओं की यही एक मात्र इच्छा है कि 'फिर इतिहास दोहराया जाएगा, अब नया भविष्य बनाया जाएगा'।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि आज का दिन मेरे लिए और समाजवादियों के लिए यादगार दिन है। श्री यादव ने कहा कि पिछले वर्षो में कन्नौज का विकास रुक गया है। समाजवादी सरकार ने जनहित के जो काम किए थे, उन्हे जानबूझकर रोका गया या बर्बाद किया गया। भाजपा की भाषा, व्यवहार और कार्यप्रणाली नकारात्मक रही है, जनता को बार-बार अपमानित होना पड़ा है।

उन्होंने कहा कि यह जोश और उत्साह बता रहा है कि कन्नौज की जनता इस बार रिकार्ड बनाने जा रही है। श्री यादव ने कहा कि मैं कन्नौज की जनता को भरोसा दिलाता हूं कि कन्नौज की जो खुशबू, पहचान और भाईचारे की संस्कृति है। उसे और आगे बढ़ाऊंगा। कन्नौज में विकास का ऐसा काम करेंगे कि वह इतिहास में दर्ज होगा।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि हमने कन्नौज में विकास किया। आज कन्नौज के विकास की पहचान इस क्षेत्र के साथ-साथ पूरी दुनिया तक पहुंची है। चाहे वह एक्सप्रेस वे हो या इत्र के क्षेत्र में किया गया कार्य। कन्नौज की चर्चा पूरी दुनिया में होती है। उन्होंने कहा कि मैं कन्नौज की जनता को भरोसा दिलाता हूं कि यहां के इत्र के लिए, नौजवानों के लिए और विकास के लिए जो कार्य अधूरे रह गए हैं उन्हें आगे बढ़ाऊंगा। आज जिस जोश और उत्साह के साथ आप लोग यहां मौजूद हैं, अगर इसी जोश और उत्साह के साथ गांव में जाकर अपने बूथ पर काम करेंगे तो कन्नौज से समाजवादी पार्टी की अब तक की सबसे बड़ी जीत होगी।

कन्नौज में अखिलेश को हर तबके का समर्थन

बुलेटिन ब्यूरो

कन्नौज संसदीय सीट से नामांकन के साथ ही समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के समर्थन में समाज का हर तबका आगे आ गया है। समाज के हर तबके ने इस चुनाव को अपना चुनाव मानते हुए चुनाव प्रचार की बागडोर संभाल ली है। कन्नौज में स्थिति यह है कि दलीय सीमाएं भी टूट गईं हैं और सभी की एक ही इच्छा और मंशा है कि अखिलेश यादव को रिकार्ड मतों से चुनाव जिताया जाए।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के चुनाव लड़ने के ऐलान के बाद ही कन्नौज की सियासी फिजा बदल गई। नामांकन से पहले ही कन्नौज में समाज के सभी तबके ने समर्थन का ऐलान कर दिया।

21 अप्रैल को समाजवादी व्यापार सभा के प्रदेश स्तरीय 'व्यापारी जोड़ो और भाजपा की पोल खोलो' मुहिम के तहत कन्नौज में समाजवादी व्यापार सभा द्वारा व्यापारी संवाद में कन्नौज समेत पूरे उत्तर प्रदेश से भाजपा को उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया

गया। व्यापारी संवाद में समाजवादी व्यापार सभा के प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष/प्रवक्ता अभिमन्यु गुप्ता ने व्यापारी समाज को बताया कि व्यापारियों की आवाज केवल श्री अखिलेश यादव और समाजवादी पार्टी ने ही उठाई है। श्री अभिमन्यु गुप्ता ने कहा कि वर्तमान कन्नौज सांसद ने केवल व्यापारियों को डराया है और उनका उत्पीड़न किया है। कन्नौज के व्यापारिक महत्व को भाजपा ने खत्म कर दिया। कन्नौज के व्यापारी इस लोकसभा चुनाव में भाजपा को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए संकल्पित हैं। व्यापारियों ने शीघ्र ही कन्नौज में बड़ा व्यापारी सम्मेलन करने का फैसला किया है।

व्यापारी संवाद में समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष कलीम खान, व्यापार सभा जिलाध्यक्ष कन्नौज प्रियतेश सिंह तोमर, जिला उपाध्यक्ष व्यापार सभा साहिल खान, राजू यादव कोषाध्यक्ष, प्रदेश सचिव व्यापार सभा विवेक श्रीवास्तव दीपू, काले खान, ऋषि राज अग्रवाल, विनय कुमार, प्रदीप तिवारी, साकिफ कुरैशी आदि मौजूद रहे।

सामाजिक सरोकार से हमेशा जुड़े रहे समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव भी कन्नौज से किस तरह जुड़े हैं, यह 18 अप्रैल को तब देखने को मिला जब वह कन्नौज के भुड़पुरवा गांव पहुंचे। उन्होंने यहां स्व ब्रजेश पाल को श्रद्धांजलि अर्पित की और परिवारीजनों से मिलकर शोक संवेदना प्रकट की। ब्रजेश पाल ने नौकरी न मिलने के कारण अपनी डिग्रियां जलाकर आत्महत्या कर ली थी। यहां श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा के झूठे वायदे सुनते- सुनते युवा निराश और हताश हो चुके है। युवाओं का भाजपा सरकार से भरोसा खत्म हो गया है।

अखिलेश की रैलियों में उमड़ रहा जनसैलाब

बुलेटिन ब्यूरो

लोकसभा चुनाव-2024 में पश्चिमी उत्तर प्रदेश से उठी बदलाव की बयार अब यूपी के दूसरे हिस्सों तक भी पहुंच चुकी है। जैसे-जैसे चुनावी तपिश बढ़ रही है, यह साफ होता जा रहा है कि जनता ने भाजपा सरकार को हटाने और समाजवादी पार्टी-इंडिया गठबंधन की सरकार बनाने का फैसला कर लिया है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की रैलियों में उमड़ा जनसैलाब, मिलता भरपूर समर्थन यह साबित कर रहा है कि यूपी से अब भाजपा की विदाई तय है और बदलाव की इस बयार की आंधी में सत्ताधारी भाजपा पूरी तरह ध्वस्त हो गई है।

अब तक के तीन चरणों में मतदान के दिन ही भाजपा के प्रति जनता का आक्रोश सामने आ गया। आक्रोश की बानगी है कि गर्मी-लू-धूप की परवाह किए बिना नौजवानों, बुजुर्गों, महिलाओं ने समाजवादी पार्टी-इंडिया गठबंधन के प्रत्याशियों के लिए भारी मतदान किया। इस चुनाव में मतदाताओं ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व पर भरोसा जताया। जाहिर है, जनता नफरत की राजनीति से ऊब चुकी है और लोगों में भरोसा बढ़ा है कि श्री यादव ही उन्हें न्याय दिलाएंगे। किसानों का कर्ज माफ होगा। नौजवानों को नौकरी मिलेगी। महिलाओं को सुरक्षा मिलेगी।

दरअसल बदलाव की यह बयार यूं ही नहीं बह रही है। भाजपा के 10 सालों में जनता को कोई काम नहीं हुआ। पूरे 10 साल सिर्फ जुमलेबाजी की गई। एक भी वायदा पूरा नहीं हुआ। जनता महंगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी से परेशान है। समाज को बांटने वाली भाजपा से जनता का कोई सरोकार नहीं है। जनता महंगाई व बेरोजगारी से निजात चाहती है और वह समझ गई है कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री

इस बार

BABU

गठबन्धन जिन्दाबाद

PREM AGRA

JAFRI SERVICE

अखिलेश यादव के नेतृत्व में संविधान और लोकतंत्र की रक्षा हो पाएगी। यही वजह है कि श्री अखिलेश यादव की रैलियों में जनसमूह उमड़ रहा है।

श्री अखिलेश यादव की सभाओं में उमड़े जनसमूह को देखकर भाजपा खेमे में खलबली मची हुई है और वह मतदान में धांधली के अपने पुराने ढर्रे पर उतर आई है। अब तक जिन चरणों में मतदान हुए हैं, भाजपा ने व्यवधान डालने और सत्ता का दुरुपयोग करने में कोई कसर नहीं छोड़ी लेकिन बदलाव की बयार अब थमने वाली नहीं है और अंतिम चरण तक इस बयार में भाजपा का सूपड़ा साफ होना तय है।

चुनाव केतीन चरण बीत चुके हैं और चुनावी पारा चढ़ गया है। जैसे-जैसे चुनाव आगे बढ़ रहा है, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की रैलियां भी तेजी पकड़ चुकी हैं। फिरोजाबाद, एटा, हाथरस, आगरा, मैनपुरी, इटावा, बदायूं, आंवला, में काफी बड़ी रैलियों को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने भाजपा सरकार पर किसानों, और नौजवानों के साथ हो रहे अन्याय और महंगाई, बेरोजगारी, पेपर लीक की घटनाओं को लेकर जोरदार हमला बोला। श्री यादव ने कहा कि भाजपा ने किसानों, नौजवानों, मजदूरों, गरीबों सभी के साथ विश्वासघात किया है। उन्हें धोखा दिया है। भाजपा सबसे झूठी पार्टी है।

उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी और विपक्षी दलों के खिलाफ भाजपा झूठा प्रचार करती है। भाजपा ने देश के सारे भ्रष्टाचारियों और अपराधियों को अपनी पार्टी में शामिल कर लिया है। दूसरों पर झूठा आरोप लगाती है। किसानों की आय दोगुनी नहीं हुई। खेती का लागत मूल्य बढ़ गया लेकिन फसलों का सही मूल्य नहीं मिल रहा है। गेहूं की सरकारी खरीद नहीं हो रही है। भाजपा सरकार ने किसानों की फसलों को एमएसपी का कानूनी अधिकार नहीं दिया।

उसने किसान आंदोलन को बदनाम किया। किसानों को अपमानित किया। भाजपा सरकार के दस साल के कार्यकाल में गरीबी और कर्ज से परेशान एक लाख किसानों ने आत्महत्या कर ली। इस सरकार ने पूंजीपतियों का 16 लाख करोड़ का कर्ज माफ कर दिया लेकिन किसानों का कर्ज माफ नहीं किया। भाजपा के दस साल की सरकार में किसी के जीवन में बदलाव नहीं हुआ।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा चुनाव हार रही है। इंडिया गठबंधन जीत रहा है। समाजवादी पार्टी पीडीए इंडिया गठबंधन मिलकर भाजपा के एनडीए पर

भारी है। जबसे समाजवादी पार्टी ने पीडीए बनाया है, भाजपा घबराई हुई है। पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक, आधी आबादी और आदिवासी समाज एकजुट होकर इंडिया गठबंधन के पक्ष में वोट कर रहा है। जनता ने भाजपा को नकार दिया है। चुनाव हाथ से निकलता देख भाजपा नेताओं की भाषा बदल गयी है। भाजपा की दिल्ली और लखनऊ की सरकार ने महंगाई, बेरोजगारी बहुत बढ़ा दी है।

उन्होंने कहा कि भाजपा के नेता महंगाई, बेरोजगारी और पेपरलीक से नौजवानों को हुए नुकसान की बात नहीं करते है। भाजपा सरकार ने दस साल में नौजवानों की नौकरियां छीनी हैं। नौकरी, रोजगार नहीं दिया। सिर्फ झूठे वायदे किए।

श्री यादव ने कहा कि यह लोकसभा चुनाव बेहद महत्वपूर्ण और सबसे अलग है। यह चुनाव लोकतंत्र संविधान और आरक्षण बचाने का चुनाव है। भाजपा बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर के बनाए हुए संविधान को खत्म करना चाहती है। पिछड़ों, दलितों का आरक्षण समाप्त करना चाहती है। भाजपा के इरादे ठीक नहीं हैं। वह वोट का अधिकार छीनना चाहती है। भाजपा के अहंकार को खत्म करने का चुनाव है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि वोट के जरिए सत्ता में आई भाजपा तानाशाही पर उतर आई है। विपक्षी नेताओं को झूठे मुकदमों में फंसाकर जेल भेज रही है। सरकारी एजेंसियों ईडी, सीबीआई, इनकम टैक्स का दुरुपयोग हो रहा है। भ्रष्टाचार और महंगाई बढ़ाई है। सरकारी एजेंसियों से दबाव डालकर हजारों करोड़ रुपये का चुनावी चंदा वसूला। इलेक्टोरल बांड ने भाजपा की पोल खोल दी है। उन्होंने कहा कि वोट से सत्ता में आई और वोट की ही ताकत से ही उसे हटाना है। अब तक के चरणों में जनता ने भाजपा की बैंड बजा दी है। हवा और माहौल इंडिया गठबंधन के पक्ष में है।

श्री यादव ने कहा कि केन्द्र में समाजवादी पार्टी इंडिया गठबंधन की सरकार बनते ही किसानों का कर्ज माफ किया जाएगा। किसानों की फसलों को एमएसपी का कानूनी अधिकार दिया जाएगा। किसानों को सम्मान, नौजवानों को नौकरी दी जाएगी। 30 लाख भर्तियां की जाएंगी। अग्निवीर योजना खत्म कर युवाओं को सेना की पहले की तरह पक्की नौकरी दी जाएगी। महंगाई कम होगी। शिक्षामित्रों का सम्मान होगा। गरीबों को राशन के साथ पौष्टिक आटा दिया जाएगा। गरीबों को मोबाइल फोन चलाने के लिए डाटा मुफ्त दिया जाएगा।

भाजपा के ढहते किले में मचा हाहाकार

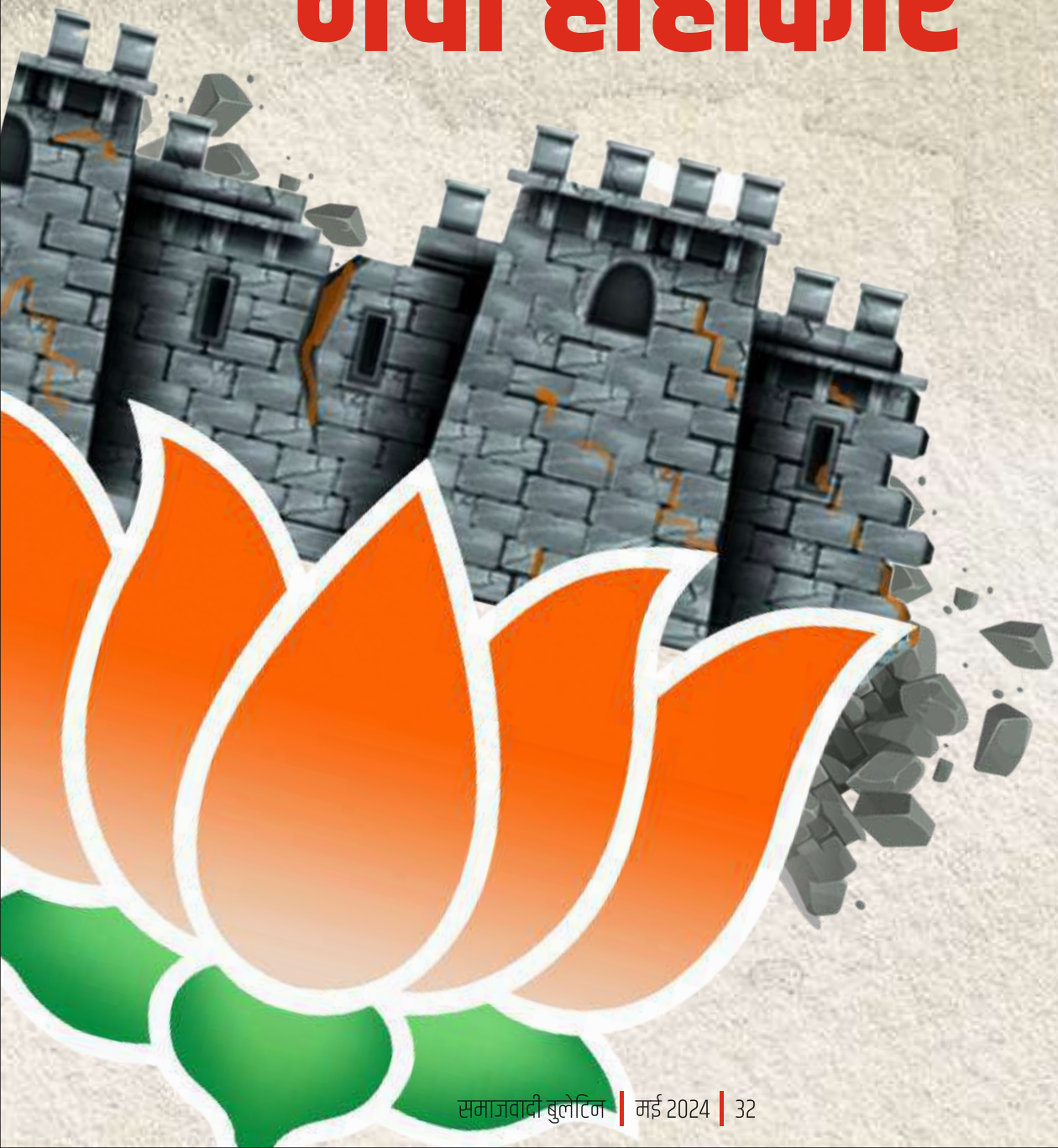

अरुण कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

कई बार ज्यादा चालाकी भी मूर्खता के मार्ग पर धकेल देती है। शायद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी पार्टी के साथ ऐसा ही होता दिख रहा है। जो नेता और जो पार्टी 18 वीं लोकसभा का चुनाव आरंभ होने के पहले अबकी बार—चार सौ पार का नारा लगा रहे थे, वे पहला और दूसरा चरण बीतते बीतते देश के अल्पसंख्यक समाज यानी मुसलमानों को खुलकर निशाने पर लेने लगे। पता नहीं यह चार सौ पार जाने की हुंकार है या ढहते किले में मचा हाहाकार है। असलियत तो चार जून को ही पता चलेगी लेकिन एक बात तय है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपने दस साल के किए गए किसी काम पर भरोसा नहीं है। न ही वे अपने चुनाव घोषणा पत्र को इस लायक समझते हैं कि उसकी किसी बात का खुलकर उल्लेख करें। इसीलिए उन्होंने यह चुनाव अब नकारात्मक एजेंडे पर जीतने का फैसला कर लिया है।

वे पिछली सरकारों के चालीस साल पुराने यानी बीसवीं सदी के कामों की आलोचना करके इक्कीसवीं सदी का चुनाव जीतना चाहते हैं। वास्तव में पिछले दस सालों में उन्होंने नकारात्मक एजेंडे के अलावा कोई सकारात्मक काम किया ही नहीं। उन्होंने मर्यादा भंग के अलावा कहीं मर्यादा स्थापित नहीं की इसलिए उनके पास अपने कार्यकाल की सकारात्मक बातें गिनाने की बजाय विपक्षी दलों के घोषणा-पत्र पर चर्चा करने के अलावा कोई चारा नहीं है।

ज्यादातर आम चुनावों में यह नौबत ही नहीं आती थी कि प्रधानमंत्री के भाषण के बारे में चुनाव आयोग से आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायत करनी पड़े। लेकिन मौजूदा प्रधानमंत्री ने उन सारी मर्यादाओं को तार तार कर दिया है

वास्तव में मोदी सरकार ने भ्रष्टाचार मिटाने के नाम पर कुछ भी नहीं किया। अलबत्ता मोदी सरकार ने चुनावी भ्रष्टाचार मिटाने के नाम पर इलेक्टोरल बांड की योजना शुरू की जिसे संविधान विरोधी बताते हुए स्वयं सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया। अब उसकी जो हकीकत सामने आ रही है वह नोटबंदी से भी बड़े घोटाले के रूप में प्रकट हो रही है। दरअसल वह एक किस्म की फिरौती वसूलने की कहानी बन गई थी। कंपनियों पर छापा डालो और उन्हें इलेक्टोरल बांड खरीदने पर मजबूर करो।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषणों का स्तर जितना नीचे गिर गया है उतना नीचे का स्तर अभी तक देश के किसी प्रधानमंत्री ने नहीं छुआ। कम से कम किसी प्रधानमंत्री के भाषण में दूसरे प्रधानमंत्री के बारे में तथ्यात्मक रूप से गलत आरोप नहीं लगाया जाता था। बल्कि ज्यादातर आम चुनावों में यह नौबत ही नहीं आती थी कि प्रधानमंत्री के भाषण के बारे में चुनाव आयोग से आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायत करनी पड़े।

लेकिन मौजूदा प्रधानमंत्री ने उन सारी मर्यादाओं को तार तार कर दिया है। विपक्षी दलों के इंडिया गठबंधन के प्रमुख घटक दल कांग्रेस के घोषणा पत्र को लेकर प्रधानमंत्री चुनावी सभाओं में जिस तरीके के आरोप लगा रहे हैं वह हैरान करने वाले हैं क्योंकि वह ऐसे आरोप लगा रहे हैं जो घोषणा पत्र में

हैं ही नहीं।

लेकिन आश्चर्य की बात है कि मुख्यधारा के संचार माध्यमों में तमाम अर्थशास्त्री, पत्रकार, स्तंभकार, नीति निर्माता घोषणा पत्र में आर्थिक गैर बराबरी मिटाने की भनक लगते ही कांग्रेस पार्टी पर टूट पड़े हैं।

मोदी पूंजीवाद के इसी संगठित गिरोह के प्रतिनिधि हैं। किसी शायर ने ठीक ही कहा है कि जिस बात का सारे जमाने में जिक्र भी न था वह बात उनको बहुत नागवार गुज़री है। तो गरीबों को सामाजिक और आर्थिक स्तर पर बराबरी देने की बात उदारीकरण और निजीकरण के समर्थकों को बहुत नागवार गुज़री है।

अगर थामस पिकेटी की रपट कहती है कि भारत में इस समय जितनी आर्थिक गैर बराबरी है उतनी गैर बराबरी अंग्रेजी जमाने में भी नहीं थी। यह गैर बराबरी न सिर्फ आर्थिक तरक्की में रुकावट डालती है बल्कि समाज में एक किस्म की अस्थिरता पैदा करती है। इसी से चिंतित होकर इंडिया गठबंधन ने समाजवाद के कुछ कार्यक्रमों को नई सदी में नया रूप देने का वादा किया है।

लेकिन भाजपा का नेतृत्व, अनुदार अभिजात वर्ग और पूंजीपति वर्ग इससे इतना बौखला गया है कि उसके स्तंभकार और नेता कहने लगे हैं कि कांग्रेस पार्टी और इंडिया गठबंधन फिर से देश को "दमनकारी समाजवादी दौर में लौटाना चाहते हैं। इसलिए उससे सावधान रहने की जरूरत है।"

वास्तव में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में संघ परिवार जो कुछ कर रहा है वह स्पष्ट रूप से एक अधिनायकवादी प्रवृत्ति है। यह प्रवृत्ति एक जनोत्तेजक नेता विकसित करती है जो आक्रामक, अतार्किक और भावुक किस्म का भाषण देता है और एक ओर दूसरे पक्ष की कड़ी से कड़ी आलोचना करता है तो दूसरी ओर लोक लुभावने सपने दिखाकर जनता को अपनी ओर खींचता है।

याद रखना चाहिए कि तानाशाही कभी सेना के माध्यम से नहीं आती। वह जब भी आती है तो चुनाव के माध्यम से ही आती है। उसके लिए वह जनता के भीतर एक किस्म की

असुरक्षा पैदा करती है। उससे पहले वह राजनीतिक प्रणाली में एक अस्थिरता भी उत्पन्न करती है। फिर वह वादा करती है कि हम आप को सुरक्षा देंगे और स्थिरता देंगे। जैसे कि मोदी जी कह रहे हैं कि विपक्षी दलों की सरकार बनी तो स्त्रियों का मंगल सूत्र छीन लेगी स्त्री धन ले लेगी और उनके दो मकान हैं तो एक मकान छीन लेगी। फिर वे कहते हैं कि जब तक मैं हूं तब तक आप पर कोई आंच नहीं आने दूंगा।

वास्तव में जनता अनिश्चितता से परेशान होती है इसलिए वह सुरक्षा के बदले अपनी स्वतंत्रता गिरवी रख देती है। इस स्थिति में वह मध्यवर्ग जिसने नैतिकता की बात की थी, कानून का राज स्थापित किया था उसी की संतानें संस्थाओं को नष्ट करने लगती हैं। यह स्थितियां ऐसे नेता को जन्म देती हैं जो अपने से नीचे काम करने वाले किसी भी नेता या संस्था के लिए जवाबदेह नहीं होता। वह अपने को राष्ट्र बताने लगता है और अपने व्यक्तित्व को ईश्वरीय स्थिति में रख देता है। यह प्रवृत्तियां जनोत्तेजक नेता या तानाशाह के चारों ओर घेराबंदी कर लेती हैं और उसे मानवीय आलोचना के दायरे से बाहर कर देती हैं।

यह अधिनायकवाद एक समूह को उत्पीड़ित बताता है और एक समूह को शत्रु बताता है। फिर जिस समूह को पीड़ित बताता है उसके लिए एक प्रकार का कर्तव्यबोध पैदा करता है जो दूसरे समूह के अधिकारों से कहीं ऊपर होता है। इसके लिए मिथकों और धार्मिक भावनाओं का भी सहारा लिया जाता है। संस्थाओं को बेकार कर दिया जाता है और उनकी जगह प्रतीकवाद का इस्तेमाल किया जाता है। हरेक कार्यक्रम और योजना का निजीकरण किया जाता है।

एक व्यक्ति को स्वाभाविक नेता के तौर पर विकसित किया जाता है और उसका अधिकार पूरे समाज पर कायम किया जाता है। एक प्रकार से राष्ट्रीय सरगना तैयार किया जाता है और लोगों को समझाया जाता है कि वही समूह का भविष्य निर्धारित कर सकता है। मोदी जी के नेतृत्व में भारत इसी तरह के अधिनायकवाद की ढलान पर जा चुका है।

लेकिन जिस तरह से देश में पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक समाज के साथ आदिवासी, स्त्री और किसान मजदूरों ने एकता बनाई है और इंडिया गठबंधन में शामिल विभिन्न दलों के घोषणा पत्रों में एक किस्म का तालमेल दिखाई पड़ रहा है उससे यह उम्मीद बनती है कि देश अधिनायकवाद का जवाब देने की तैयारी में है।

इसकी झलक मोदी की रैलियों में बदलते नारे के रूप में देखा जा सकता है। अब वहां नारा लग रहा है फिर एक बार मोदी सरकार। फिर एक बार गरीबों की सरकार। फिर एक बार एससी-एसटी और ओबीसी को समर्पित सरकार। फिर एक बार विकास को समर्पित सरकार। यानी चार सौ पार का नारा गायब हो गया है। लेकिन नारे बदलने से पहले ही सेल्फ गोल हो चुका है और वह गोल किसी और ने नहीं मोदी जी ने स्वयं किया है।

बेरोजगारी पर कन्नी काट रही भाजपा

प्रेम कुमार
वरिष्ठ पत्रकार

इंडिया टुडे - सी वोटर ने फरवरी 2024 में एक सर्वे में बताया था कि महंगाई और बेरोजगारी को 45 प्रतिशत लोग मुद्दा मानते हैं। सीएसडीएस ने मार्च-अप्रैल में अपने सर्वे में 50 प्रतिशत लोगों के बीच ऐसी भावना देखी। इन्हीं सर्वे में महंगाई और बेरोजगारी के बीच आम लोग महंगाई को बड़ा मुद्दा मानते हैं। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव और कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने साझा प्रेस कॉन्फ्रेन्स कर यह साफ तौर पर कहा कि बड़ा मुद्दा बेरोजगारी है। दूसरे नंबर पर महंगाई है।

महंगाई का बढ़ना तब अधिक चिंताजनक हो जाता है जब पास में रोजगार नहीं होता। अगर रोजगार हो तो महंगाई से लड़ा जा सकता है। तब महंगाई एक निश्चित गति से बढ़े तो इसे देश की अर्थव्यवस्था के लिए जरूरी भी समझा जाता है। मोदी सरकार में न सिर्फ बेरोजगारी बढ़ी है बल्कि छंटनी का

लंबा दौर चला है। छोटे-मझोले कारोबार बंद हुए हैं। इससे कम सैलरी वाली नौकरी भी कम हुई है।

- शिक्षित बेरोजगार जहां 2000 में 54.2% थे वही 2022 में बढ़कर 65.7% के स्तर पर पहुंच गये।
- ग्रैजुएट बेरोजगार की हिस्सेदारी 29.1% के स्तर पर आ गयी।
- अशिक्षित बेरोजगारों की हिस्सेदारी 3.4% है।
- इसका मतलब यह हुआ कि ग्रैजुएट बेरोजगारों की संख्या अशिक्षित बेरोजगारों की तुलना में 9 गुणा बढ़ गयी।

अधिक पढ़ाई से रोजगार मिलना मुश्किल

पढ़ाई करने से रोज़गार मिलते हैं। यह आम समझ है। मगर, मोदी सरकार में यह समझ पलट गयी है। जितना ज्यादा पढ़ोगे उतना अधिक आशंका रहेगी बेरोजगार रहने की। आश्चर्य होता है ना! इंटरनेशनल लेबर ऑर्गनाइजेशन के हालिया आंकड़े ऐसी कई सच्चाइयां उजागर करते हैं। बेरोजगारी से जुड़े कुछ तथ्यों को समझना जरूरी है।

आप संतोष कर सकते हैं कि 2021-22 में जो बेरोजगारी दर 12.4% थी वह 2022-23 में घटकर 10% रह गयी लेकिन बेरोजगारों में युवाओं की हिस्सेदारी पर गौर करेंगे तो चिंता बढ़ जाएगी। बेरोजगारों के बीच युवाओं की हिस्सेदारी 2022 में 82.9% तक पहुंच गयी। यह खतरनाक भी है और चिंताजनक स्तर भी। जैसा कि ऊपर चर्चा है कि जितनी ज्यादा पढ़ाई उतना अधिक बेरोजगारी।

रोजगार देने को लेकर चुप है बीजेपी

यह अजीबोगरीब बात है कि जहां विपक्ष बेरोजगारी को मुद्दा बना रहा है वहीं सत्ता पक्ष रोजगार देने को लेकर चुप है। बीजेपी के नेता इस पर कुछ बोलने से बच रहे हैं। जवाब में वे आंकड़ों के सहारे रोजगार देने की बात करते हैं लेकिन, ये आंकड़े जमीनी हकीक़त को बयां नहीं करते। इस बिन्दु को भी हम आगे स्पष्ट कर रहे हैं लेकिन जिस सेक्टर ने लगातार बेरोजगारों को नौकरी दी है उसकी चर्चा पहले करना जरूरी है।

सेना और रेलवे में बड़ी संख्या में नौकरी रही है। मगर, सेना में नियमित भर्ती कोविड के बाद से ही रुकी हुई है। अब अग्निवीर योजना में महज चार साल की नौकरी का प्रावधान होने से युवा सेना से विमुख हुए हैं। रेलवे में पौने तीन लाख रिक्तियां हैं जिन्हें भरा नहीं गया। विपक्ष ने 30 लाख से लेकर 1 करोड़ तक की संख्या में रोजगार देने का वायदा अपने-अपने घोषणापत्रों में किया है।

लोकसभा चुनाव के तीन चरणों में अब तक सत्ताधारी दल बीजेपी ने राम मंदिर, धारा 370, सीएए-एनआरसी के अलावा हिन्दू-मुस्लिम एजेंडा ही सामने रखा है। रोजगार देने का कोई वायदा नहीं है। बीजेपी के घोषणापत्र में बेरोजगारी शब्द का उल्लेख तक नहीं है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार केवल और केवल विपक्ष पर सांप्रदायिक

'बेरोजगार बारात यात्रा'

बुलेटिन ब्यूरो

बेरोजगार युवाओं ने अपना विरोध दर्ज करने के लिए 4 मई को मैनपुरी में भाजपा सरकार के ख़िलाफ़ एक अनूठी 'बेरोज़गार बारात यात्रा' निकाली। उन्होंने कहा कि जब 'मन की बात' हो सकती है, तो 'मन की बारात' क्यों नहीं।

बेरोजगारों की इस यात्रा के दौरान ही श्री अखिलेश यादव मैनपुरी में रोड शो कर रहे थे। उनके साथ मैनपुरी की सांसद एवं सपा प्रत्याशी डिंपल यादव जी भी थीं। बेरोजगारों को देखकर श्री अखिलेश यादव उनसे मिलने गए और उनका हौसला बढ़ाया।

बेरोजगारों ने कहा कि हम ये यात्रा इसलिए निकाल रहे हैं क्योंकि भाजपा राज में तो हमारी नौकरी-रोज़गार की कोई उम्मीद नहीं बची, इसलिए असलियत में तो हमारी शादी या बारात की कोई आशा नहीं बची है। इसीलिए हम अपने 'मन की बारात' निकालकर अपनी भड़ास निकाल रहे हैं, दरअसल ये 'बारात' नहीं, बेरोज़गारों की 'भड़ास' है।

युवाओं ने बताया कि देश भर के युवाओं ने मन बनाया है कि इस बार वो 'इंडिया गठबंधन' के प्रत्याशियों को ही जिताएंगे और भाजपा को भगाएंगे।

सीएमआईई के आंकड़ों को देखें तो वे बताते हैं कि बेरोजगारी लगातार बढ़ रही है।

सीएमआईई	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23
बेरोजगारी दर	4.6	6.3	7.6	10	8	7.6

आधार पर हमला कर रहे हैं। संविधान और लोकतंत्र खतरे में है- इसे विपक्ष ने चुनाव का मुद्दा बना दिया है।

मजबूरन नरेंद्र मोदी को भी भरोसा देना पड़ रहा है कि वे संविधान बचाए रखने की गारंटी देते हैं। आरक्षण खत्म नहीं करने का भरोसा भी वे दिला रहे हैं। मगर, जिस तरीके से कांग्रेस के घोषणा पत्र को मुस्लिमलीगी बताने और महिलाओं का मंगलसूत्र छीनकर मुसलमानों को देने की बात पीएम मोदी ने कही है उससे आम लोगों को लगने लगा है कि मोदी अमूमन झूठ ही बोलते रहे हैं। जाहिर है मोदी की बातों पर भरोसा ही घट गया लगता है।

बेरोजगारी से महंगाई का प्रकोप डबल

आम लोग महंगाई और बेरोजगारी का डबल अटैक झेल रहे हैं। जरूरत की चीजें लोग खरीद नहीं पा रहे हैं। उज्ज्वला योजना से गैस कनेक्शन तो मिला लेकिन गैस रिफिल नहीं करा पा रहे हैं आम लोग। 5 किलो राशन से राहत तो मिलती है लेकिन जरूरत पूरी नहीं होती और परेशानी बढ़ी हुई है। अगर रोजगार देने पर ध्यान दिया जाए तो आम लोगों के हाथों में नकद आएंगे। इससे समस्याएं दूर होंगी।

कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने अपने-अपने घोषणापत्रों में महिलाओं, दलितों, पिछड़ों और युवाओं के लिए रोजगार देने के साथ-साथ अपने पैरों पर खड़े होने के लिए नकद देने की भी बात की है। मगर, आश्चर्य

फोटो स्रोत : गूगल

की बात ये है कि सत्ताधारी पार्टी ने इस बात की पूरी अनदेखी कर दी है। केवल और केवल अमीरों के लिए सोच रही बीजेपी ने आम लोगों की सहूलियत के हिसाब से नीतियों बनाने का भरोसा तक देना जरूरी नहीं समझा है।

सरकार ही सरकारी आंकड़ों को झुठला रही

सरकारी आंकड़ों को देखने से पता चलता है कि देश में वर्कफोर्स बढ़ रहा है और बेरोजगारी घट रही है। लेकिन, ये आंकड़े विश्वसनीय नहीं लगते। पीएलएफएस के आंकड़े कहते हैं कि 2021-22 के दौरान 2.3 करोड़ लोग ही बेरोजगार थे। लेकिन, संसद में दी गयी जानकारी इस आंकड़े को खारिज करते दिखते हैं। मिनिस्ट्री ऑफ पर्सनल, पब्लिक ग्रिवांसेंज एंड पेंशन्स मिनिस्टर ने 22 जुलाई 2022 को बताया है कि 2014 और 2022 के बीच नौकरी के लिए 22.06 करोड़ आवेदन दिया। इनमें से 7.22 लाख करोड़ लोगों नौकरी मिली।

झूठे आंकड़ों से भी विपक्ष को लड़ना पड़ रहा है। पोषित मीडिया झूठे आंकड़ों को ही सही बताकर पेश करती रही है। मगर, सच्चाई कैसे छुपेगी?

झूठे आंकड़ों से भी विपक्ष को लड़ना पड़ रहा है। पोषित मीडिया झूठे आंकड़ों को ही सही बताकर पेश करती रही है। मगर, सच्चाई कैसे छुपेगी? आम लोगों में बेरोजगारी है यह बात उभरकर सामने आ रही है।

बेरोजगारी और आम लोगों की महंगाई के कारण तकलीफें नजरअंदाज नहीं की जा सकतीं। यही कारण है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में मोदी मैजिक गायब नज़र आ रहा है। केवल भाषण और 5 किलो राशन से जनता आगे सोच रही है। यह समझ मजबूत हुई है कि एक परिवार को अगर सरकारी नौकरी मिलती है तो इसका बड़ा असर पूरे परिवार पर पड़ता है।

एक गैर सरकारी नौकरी भी एक परिवार को मजबूत आधार देता है। इसके अभाव में एक मेडिकल बिल भी किसी खाते-पीते परिवार को गरीबी रेखा से नीचे भेजने में कामयाब हो जाता है। महंगाई और बेरोजगारी के दौर में भारी भरकम मेडिकल बिल परेशानी का सबब बन चुका है। जनता यही सवाल कर रही है कि आखिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रोजगार देने की बात क्यों नहीं करते?

उलगुलान रैली में दिखा INDIA का दम

बुलेटिन ब्यूरो

पटना व दिल्ली के बाद झारखंड की राजधानी रांची में हुई INDIA गठबंधन की संयुक्त रैली में विपक्षी दलों ने एका का दम दिखाते हुए देश को संदेश दिया कि उनकी एकता के बल पर अब सत्तारूढ़ भाजपा शिकस्त खा चुकी है। विपक्षी दलों की इस संयुक्त रैली में गठबंधन में शामिल विभिन्न विपक्षी दलों के वरिष्ठ नेताओं ने भाजपा की कुनीतियों पर करारा प्रहार किया और देश को बताया कि भाजपा के लोग किस तरह संविधान के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं।

21 अप्रैल को रांची में हुई उलगुलान महारैली में जनसैलाब उमड़ा। इस रैली को INDIA गठबंधन का उत्तर प्रदेश में नेतृत्व कर रहे समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने भी संबोधित किया और बताया कि किस तरह भाजपा देश को कमजोर कर रही है।

उलगुलान महारैली को संबोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा देश में लोकतंत्र और संविधान के लिए खतरा बन गई है। लोकसभा चुनाव में हार से डरी भाजपा अन्याय और तानाशाही पर उतर आई है। यह लोकसभा चुनाव बहुत विशेष है। यह लोकतंत्र, संविधान और आरक्षण बचाने, भाजपा की तानाशाही को उखाड़ फेंकने का चुनाव है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि लोकसभा चुनाव में भाजपा को हर हालत में हटाना है। अगर देश की जनता हटाने से चूक गई तो भाजपा वोट का अधिकार छीन लेगी। भाजपा देश पर अंग्रेजों की तरह शासन करना चाहती है। उन्होंने कहा कि देश में जितने भी तानाशाह हुए हैं वे वोट से सत्ता में आए थे। भाजपा को वोट के जरिए ही सत्ता

से बाहर करना है। भाजपा ने देश को पीछे कर दिया है। महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार चरम पर पहुंचा दिया है। इनके पास देश की जनता को बताने के लिए कुछ नहीं बचा है।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा सबसे झूठी पार्टी है। इलेक्टोरल बांड के नाम पर भारी भ्रष्टाचार किया है। हजारों करोड़ रूपये की चुनावी चंदा के नाम पर वसूली की है। तमाम कम्पनियों को डराकर वसूली की। कोरोना के समय वैक्सीन बनाने वाली कम्पनी से भी वसूली कर ली है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा ने युवाओं की नौकरी छीनी है। हर साल दो करोड़ नौकरी देने का झूठा वायदा किया। आज देश में 80-90 फीसदी पढ़ा-लिखा नौजवान बेरोजगार है। भाजपा सरकारों में भर्ती परीक्षाओं के तमाम पेपर लीक हुए। श्री यादव ने कहा कि पहले जुमलेबाजी करने वाले भाजपा के लोग जनता को झूठी गारंटी दे रहे हैं। देश की जनता को भाजपा की गारंटी नहीं, बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर के संविधान की गारंटी चाहिए। इंडिया गठबंधन जनता को संविधान की गारंटी देता है। संविधान की गारंटी में सब कुछ है।

इंडिया गठबंधन संविधान, लोकतंत्र और आरक्षण बचाने की लड़ाई लड़ रहा है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने हार के डर से झारखंड के मुख्यमंत्री रहे श्री हेमंत सोरेन और दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल को झूठे मामलों में जेल भिजवाया।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा ने झारखंड और आदिवासियों के साथ बहुत अन्याय और लूट की है। उन्होंने कहा कि अब तक हुए मतदान में उत्तर प्रदेश में भाजपा का सफाया हो गया है। किसान, नौजवान सहित सभी लोग एकजुट होकर भाजपा के खिलाफ मतदान कर रहे हैं। भाजपा की सरकार अब बचने वाली नहीं है।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

ये है तरक़्क़ी की ख़ुशबू : परफ़्यूम पार्क कन्नौज

सपा का काम, विकास के नाम!

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

@ मैनपुरी_संसदीय_क्षेत्र

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

वसूली को चंदा कहनेवाले, अब प्रसाद को चूरन कह रहे हैं। कभी ये छियालिस में छप्पन वाली उल्टी गणित समझाते हैं। इनका सब कुछ उल्टा-पुल्टा है, इसीलिए इस बार जनता इनको उलटने-पलटने जा रही है।

जनता सही पाठ पढ़ाने के लिए भाजपा की क्लास लेने को तैयार है, पहले चरण का लेक्चर हो चुका है, दूसरा सबक़ कल दिया जाएगा... आख़िरी चरण आते-आते जनता इनका पूरा इलाज कर देगी।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

झूठ बोलना दरअसल मूर्ख बनाने की मानसिक साज़िश का शाब्दिक रूप होता है। झूठ ख़ुदगर्ज़ी का एक घिनौना रूप होता है। झूठ एक न एक दिन खुल ही जाता है। जब झूठ खुलता है तो वो सबसे ज़्यादा अपमानित और पराजित होता है जिससे झूठ बोला गया है। झूठ बोलने की आदत एक दिन उस स्तर पर पहुँच जाती है कि लोग अपनों से ही नहीं, अपने से भी झूठ बोलने लगते हैं, जो उनके आपसी संबंधों और स्वयं के पतन का कारण बन जाती है।

झूठ को अपनी बुनियाद बनानेवाले रेत को सीमेंट समझने की भूल कर बैठते हैं। इसी कारण जब वो झूठ पर अपनी इमारत बड़ी से बड़ी करते जाते हैं तो एक दिन वो महाझूठ का दुर्ग ख़ुद के भार से ही ढह जाता है। इसीलिए हर युग में अंत में जीतता सच ही है।

असत्यमेव पराजयते!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

'एटा का बेटा' बेरोज़गारी का जवाब देने के लिए तैयार है बैठा।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जय जोहार के संग यही है पुकार
इंडिया की जीत, भाजपा की हार

जीत रहा है इंडिया!

#उलगुलान_न्याय_रैली

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा सरकार की पोल खोलनेवाले विदेशी पत्रकारों के संग जैसा दुर्व्यवहार हो रहा है वो निंदनीय है। विदेशी पत्रकारों को भारत छोड़कर जाने के लिए मजबूर करना, दुनिया में भारत की लोकतांत्रिक छवि को धूमिल कर रहा है।

मीडिया की स्वतंत्रता, स्वस्थ लोकतंत्र की आवाज़ होती है।

#कभी_नहीं_चाहिए_भाजपा

Following

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

ख़ुशबू भरी, भाईचारे को बढ़ावा देनेवाली और ख़ुशियाँ लानेवाली सकारात्मक राजनीति के दौर का आना तथा भाजपा की नफ़रत भरी नकारात्मक राजनीति का जाना ही 'कन्नौज-क्रांति' है।

#PDA_हरायेगा_NDA
#जीत_रहा_है_INDIA

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जन-जन तक पहुँच रहा संदेश
संविधान बचेगा तो बचेगा देश

संविधान ही संजीवनी है!

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

कन्नौज में 'कन्नौज के कायाकल्प' के लिए जन-संपर्क यात्रा.

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

संभल का सौहार्द जीतेगा।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

एक व्यक्ति को 2 वैक्सीन के हिसाब से लगभग 80 करोड़ भारतीयों को कोविशील्ड वैक्सीन दी गयी है, जिसके बारे में उसका मूल फ़ार्मूला बनानेवाली कंपनी ने कहा है कि इससे हार्ट अटैक यानी हृदयघात का ख़तरा हो सकता है। जिन लोगों ने वैक्सीन के साइड एफ़ेक्ट के कारण अपनों को खोया है या जिन्हें वैक्सीन के दुष्परिणामों की आशंका थी, अब उनका शक़ और डर सही साबित हुआ है।

लोगों की ज़िंदगी से खिलवाड़ करनेवालों को जनता कभी माफ़ नहीं करेगी। ऐसी जानलेवा दवाइयों को अनुमति देना किसी की हत्या के षड्यंत्र के बराबर है और इसके लिए ज़िम्मेदार सभी पर आपराधिक मुक़दमा चलना चाहिए।

सत्ताधारी दल ने वैक्सीन बनानेवाली कंपनी से राजनीतिक चंदा वसूलकर जनता की जान की बाज़ी लगायी है। न क़ानून कभी उन्हें माफ़ करेगा, न जनता। इस मामले में सर्वोच्च स्तर पर न्यायिक जाँच हो।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा के ख़िलाफ़ उप्र के बेरोज़गार युवाओं का आक्रोश तब और बढ़ जाता है जब भाजपा का शीर्ष नेतृत्व झूठे बयानों से जनता को बहकाने की कोशिश करता है।

ताज़ा मामले में #69000_शिक्षक_भर्ती में जिस प्रकार भाजपा सरकार द्वारा आरक्षण मारा गया उसके बारे में अब भाजपा बेशर्मी से कह रही है कि हम किसी को आरक्षण मारने नहीं देंगे। कोई इन झूठे भाजपाइयों से पूछे कि जब देश-प्रदेश दोनों जगह सरकार आपकी है तो फिर आरक्षण भी तो आप ही मारेंगे न।

भाजपा समझ गयी है कि अब PDA समाज जाग गया है और अपने आरक्षण और आरक्षण देनेवाले संविधान को बचाने के लिए भाजपा के ख़िलाफ़ थोक में वोट कर रहा है तो भाजपाई सरेआम झूठ बोलने पर उतारू हो गये हैं।

भाजपा से जनता का मोहभंग हो चुका है।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

सीवर साफ़ करने उतरे दो सफ़ाईकर्मियों की मृत्यु, वो भी 'श्रमिक दिवस' पर बेहद दुखद और शर्मनाक है।

यदि सरकार के स्तर पर दिखावटी पाद-प्रक्षालन की जगह सच में कुछ ठोस क़दम उठाए गए होते तो आज हमारे सफ़ाईकर्मी भाइयों की जान बचायी जा सकती थी। करोड़ों का इवेंट मैनेजमेंट करके दसों कैमरे लगवाने की जगह अगर सीवर की सफ़ाई के लिए मशीन पर ख़र्चा किया जाता तो ये हादसा नहीं होता।

Translate Tweet

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2024-2026 कुल पृष्ठ : 44 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

उनके नफरती इरादों पर भारी
भरोसा जगाती यह मुस्कान तुम्हारी।
हाथ जो अवाम ने उम्मीदों से बढ़ाया है
बदलाव का रंग फिज़ा में और गहराया है॥

QR कोड स्कैन करें और वाट्स-एप चैनल से जुड़ें

/Akhilesh Yadav

/Samajwadi Party

समाजवादी पार्टी

/samajwadiparty

www.samajwadiparty.in